ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वमस्माकं तव स्मसि।

ऋग्वेद 8/92/32

हे प्रभो! तू हमारा है और हम तेरे हैं।

O God! You are our all in all & we are your divine children, you are ours and we are yours.

वर्ष 39, अंक 49 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 अक्टूबर, 2016 से रविवार 16 अक्टूबर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

परोपकारिणी सभा के प्रधान एवं वैदिक विद्वान प्रो. धर्मवीर जी का असामयिक दुखद निधन
पूर्ण वैदिक विधि के अनुसार पार्थिव शरीर पंचतत्त्व में विलीन : सम्पूर्ण आर्यजगत में शोक

आर्यसमाज की अपूर्णीय क्षति – सुरेशचन्द्र आर्य

विद्वतजगत के मजबूत स्तम्भ थे धर्मवीर जी – धर्मपाल आर्य

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी संस्था श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर के प्रधान, वेदों के विद्वान, वरिष्ठ लेखक, कुशल प्रवक्ता, आर्यजनों में विशेष आदर एवं सम्मान प्राप्त करने वाले डॉ. धर्मवीर जी का दिनांक 6 अक्टूबर, 2016 की प्रातःकाल अकस्मात् निधन हो गया। उनके निधन की खबर सम्पूर्ण आर्यजगत में जंगल की आग की भांति फैल गई। अगले दिन प्रातःकाल 10 बजे ऋषि उद्यान से शवयात्रा निकाली गई तथा मूलसर शमशान घाट पर उनके पार्थिव शरीर का दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, उ.प्र. सभा के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी, मन्त्री मा. रामपाल जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी ऋतस्पति जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, स्वामी आर्यवेश जी सहित अन्य अनेक आर्यनेताओं एवं वैदिक विद्वानों ने पहुंचकर उन्हें अन्तिम विदाई दी।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा रविवार दिनांक 9 अक्टूबर को ऋषि उद्यान अजमेर में सम्पन्न हुई जिसमें सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पदाधिकारियों सर्वश्री

– शेष पृष्ठ 5 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
20 से 22 अक्तूबर 2016
नेपाल
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

20-22 अक्टूबर 2016 टुंडिखेल, काठमाण्डु

सभी तैयारियां लगभग पूर्ण : आर्यजनों के भारी संख्या में पधारने की सूचनाएं

भारत सहित बर्मा, बंगलादेश, आस्ट्रेलिया, मॉरीशस, न्यूजीलैंड, अमेरिका, कनाड़ा, हॉलैंड प्रतिनिधियों के साथ नेपाल के सभी अंचलों से पहुंचेंगे आर्यजन

शोभायात्रा : 20 अक्तूबर प्रातः 6 बजे ★ यज्ञ : प्रातः 9 बजे ★ ध्वजारोहण : प्रातः 10:30 बजे

हवाई यात्रा (यात्रा नं. 1ए / 2ए) के माध्यम से पंजीकृत सभी आर्य महानुभावों को हवाई टिकटें ईमेल एवं व्हाट्सएप्प द्वारा भेज जी गई हैं। जिन महानुभावों को टिकटें न प्राप्त हुई हों वे तत्काल श्री एस.पी. सिंह जी मो. नं. 9540040324 से सम्पर्क करें। आप सभा कार्यालय -15 हनुमान रोड नई दिल्ली से दोपहर 12:30 से सायं 7:30 के मध्य पेपर प्रिंट भी प्राप्त कर सकते हैं। बस के माध्यम से सम्मेलन में जाने वाले महानुभाव अपने निर्धारित स्थान वाराणसी/गोरखपुर 18 अक्तबर को रात्रि 9 बजे तक अवश्य ही पहुंच जाएं। इसके बाद पहुंचने वाले आर्यजनों को19 अक्तूबर को प्रातः 8 बजे बस से रवाना किया जाएगा। गोरखपुर से जाने वाले आर्यजन कृपया श्री सन्दीप आर्य जी (9540045898) तथा वाराणसी से जाने वाले आर्यजन श्री दिनेश आर्य जी (9335479095) पर सम्पर्क करें।

सभी यात्रियों के लिए विशेष सूचना 1. महानुभाव नेपाल प्रवास के दौरान नेपाल की मोबाइल सिम लेना चाहते हैं वे अपने साथ दो पासपोर्ट साईज फोटो एवं अपनी आईडी लेकर जाएं। हवाई अड्डे/नेपाल बार्डर से आप नेपाल का नया सिम प्राप्त कर सकते हैं। 2. मौसम हल्की सर्दी का होगा। अपने साथ कुछ गर्म कपड़े अवश्य रखें। 3. नेपाल में 500/- तथा 1000/- रुपये के नोट ले जाना मना है। भारतीय नोट 1000/- रुपये के 1600 नेपाली रुपये मिलते हैं। 4. बिना पूर्व सूचना अथवा बिना पंजीकरण पहुंचने वाले महानुभाव असुविधाओं से बचने के लिए अपना पंजीकरण शीघ्र करा लें। पंजीकरण के अभाव में भोजन एवं आवास की व्यवस्था नहीं कराई जा सकेगी। 5. सभी यात्रिगण ये सूचनाएं अपने सहयात्रियों तक सभी माध्यमों से अवश्य पहुचाने में सहयोगी बनें।

– सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

पूर्वोत्तर के जनजातीय क्षेत्रों में आर्यसमाज की गतिविधियों को देखने के लिए एक बार अवश्य पहुंचें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्णयानुसार आसाम-नागालैंड में

19-20-21 नवम्बर को होगा विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन

सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी रेल/हवाई यात्रा की टिकटें स्वयं आरक्षित करवा लेवें। दिल्ली एवं कोलकाता से से दीमापुर तक सीधी रेल एवं हवाई जहाज की सेवाएं उपलब्ध हैं। भारत के किसी भी क्षेत्र से गोवाहाटी तथा वहां से दीमापुर रेल द्वारा पहुंचा जा सकता है। गोवाहाटी से दीमापुर छह घंटे कीदूरी पर है। व्यवस्थाओं/सुविधाओं के सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए श्री जोगेन्द्र खट्टर 9810040982 से सम्पर्क करें।

वेद-स्वाध्याय

प्रभो! हमारे बन्धनों को शिथिल कर

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।। ऋ. 1/24/25
ऋषि: **शुनःशेपो देवरातः।।** देवता-**वरुणः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ- **वरुण**=हे पापनिवारक देव! तू **अस्मत्**=हमारे **उत्तमं पाशं उत्**= उत्तम बन्धन को ऊपर की ओर और **मध्यमं वि**=मध्यम बन्धन को बीच में तथा **अधमं अव**=अधम बन्धन को नीचे की ओर **श्रथाय**=ढीला कर दे **अथ**= जिससे, इन बन्धनों के टूटने से **आदित्य**=हे प्रकाशमय बन्धनरहित देव! **वयं तव व्रते**= हम तेरे नियमों में रहते हुए **अनागसः**= पापरहित होकर **अदितये**=बन्धन-राहित्य, स्वतन्त्रता, मुक्ति के लिए योग्य **स्याम**=हो जाएँ।

विनय- हे पापनिवारक देव! तूने हमें तीन बन्धनों से बाँध रखा है। उत्तम बन्धन हमारे सिर में हैं, जिससे हमारा आनन्द और बुद्धि बँधे हुए हैं, ढके हुए हैं, रुके हुए हैं। यह सत्त्वगुण का (कारण शरीर का) बन्धन कहा जा सकता है। हृदयस्थ मध्यम बन्धन से हमारा मन और सूक्ष्म प्राण बँधे हुए हैं। यह रज और सूक्ष्म शरीर का बंधन है। नाभि से नीचे तमोगुण और स्थूल शरीर का अधम बंधन है, जिससे हमारा स्थूल प्राण और स्थूल शरीर बँधा हुआ है। हे वरुण! इनसे बँधे रहने के कारण हमसे तेरे नियमों का भङ्ग होता रहता है और हम पापी बनते रहते हैं। उत्तम बन्धन द्वारा, सच्चा ज्ञान न मिलने से; मध्यम द्वारा राग-द्वेष, काम-क्रोध आदि के वशीभूत होने से; और अधम द्वारा, शरीर से त्रुटियुक्त कार्य करने से हम पापी बनते हैं। हे देव! तू हमारा उत्तम पाश ऊपर की ओर खोल दे, जिससे कि मेरी बुद्धि का द्युलोक के साथ सम्बन्ध स्थापित हो जाए और मुझमें सत्य-ज्ञान का प्रवेश होने लगे। मध्यम पाश को बीच से खोल दे जिससे अन्तरिक्षलोक के समुद्र में मेरे मन के प्रविष्ट हो जाने से इसके राग-द्वेषादि मल धुल जाएँ तथा मेरा मन सम हो जाए और अधम पाश को नीचे गिरा दे जिससे मेरे पार्थिव शरीर के सब कलुषित परमाणु पृथिवीतत्त्व में लीन हो जाएँ और हमारा शरीर नीरोग, स्वस्थ तथा निर्दोष होकर प्रभु के कार्य कर सके। हे प्रकाशमय बन्धनरहित देव! इन बन्धनों के टूट जाने पर हम तेरे व्रत में रह सकेंगे, हमसे तेरे नियमों का भङ्ग होना बन्द हो जाएगा। अन्त में मैं 'अदिति' (मुक्ति) के ऐसा योग्य हो जाऊँगा कि एक दिन आयेगा जबकि मेरा आत्मा स्थूल शरीर रूपी बन्धन को नीचे पृथिवी पर छोड़कर और मानसिक सूक्ष्म शरीर को अन्तरिक्ष में लीन करके अपने ऊपरी बन्धन के भी टूट जाने से ऊपर-द्युलोक-को प्राप्त हो जाएगा। बिना इन तीन बन्धनों के ढीले हुए मैं मुक्ति की ओर कैसे जा सकता हूँ? इसलिए, हे वरुण! इन बन्धनों को एक बार खोल दो-तनिक ढीला कर दो-जिससे कि मेरा मार्ग साफ हो जाए और मैं यत्न करता हुआ तेरे व्रत में रहने वाला निष्पाप, मोक्षाधिकारी हो जाऊँ।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सियासत की भी हो लाइन ऑफ कन्ट्रोल

इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि देश के दुश्मनों को उनके घर में मात देने वाले वीरों के शौर्य पर अपने देश के नेता ही राजनैतिक लाभ के लिए प्रश्नचिंह उठा रहे हैं। यदि यह काम कोई दुश्मन देश करता तो समझ आता पर अपने देश के अन्दर गरिमामयी पदों पर विराजमान लोग ही ऐसा कर रहे हैं। यह बिलकुल समझ से परे है! क्या इनकी तुलना जयचंद या मीरजाफर से कर सकते हैं? यदि नहीं! ''तो क्यों नहीं कर सकते?'' यह सवाल भी अनिवार्य सवालों की पंक्ति में खड़ा है। नेताओं को जवाब देना चाहिए कि राजनीति बड़ी या देश? यदि पिछले कुछ सालों में देखा जाये तो राजनीति अपने मूल स्तर से काफी नीचे गिरती दिखाई दे रही है न अब इसके मूल्य बचे न सिद्धांत। यदि कुछ बचा है तो सिर्फ आरोप प्रत्यारोप चाहे उसके लिए कितना भी नीचे क्यों न गिरना पड़े। पाक अधिकृत कश्मीर में सेना द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक कर देश के दुश्मनों को खत्म करना अपने आप में अपने सैनिकों द्वारा शौर्य की गाथा लिखना है। लेकिन उस गाथा पर व्यर्थ की बहस कहाँ तक जायज है?

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल जब राजनीति में प्रवेश करने वाले थे तब उन्होंने कहा था कि राजनीति में बहुत गंदगी है। गंदगी को साफ करने के लिए गटर में उतरना पड़ता है जी। उसे साफ करने के लिए इसमें उतर रहा हूँ, किन्तु अब उनकी पार्टी की राजनीति देखें तो लगता है जो गंदगी राजनीति में थी, वो तो थी ही लेकिन यह तो उसे हाथ में लेकर भारत माता के आंचल पर भी फेंकने लगे हैं। नीति, सिद्धांत और विचारधारा किसी राजनैतिक दल की जमीनी जड़ होती है। इसके बाद प्रजातंत्र में चर्चा आलोचना होती है। पर इसका ये मतलब नहीं कि शत्रु राष्ट्र के समाचार पत्रों की सुर्खियों में नायक बन जायें। हो सके तो संविधान में नेताओं के लिए भी ''लाइन ऑफ कंट्रोल'' एक नियन्त्रण रेखा होनी चाहिए कि आप यहाँ तक बढ़ सकते हैं इससे आगे बढ़ना राष्ट्र के प्रति अपराधिक गद्दारी मानी जाएगी। जिसकी सजा आम नागरिक की तरह ही भुगतना पड़ेगी। एक छोटा सा प्रसंग बताना चाहूँगा जब मैं छोटा था तो शाम को घर के बाहर चबूतरे पर गाँव के कई बुजुर्ग इकट्ठा होते और देश प्रदेश की राजनीति पर चर्चा-आलोचना करते थे। एक दिन एक बुजुर्ग ने खड़े होकर कहा- कि ''कहाँ है आजादी? गरीब को रोटी नहीं, किसान को उसकी फसल का उचित दाम नहीं, रोगी को दवाई नहीं, बच्चों को शिक्षा के लिए मूलभूत सुविधाएँ नहीं।'' इस पर मैंने बीच में ही पूछ लिया फिर आजादी का मतलब क्या है? तो उन्होंने कहा- ''यही तो आजादी का मतलब है कि हम अपने यह मुद्दे सरकार के सामने शिष्टाचार के शब्दों में बे-हिचक उठा लेते हैं।'' किन्तु अब मैं देखता हूँ कि आजादी के नाम पर हमारे देश के नेता ही लोकतान्त्रिक मूल्यों पर राजनीति के बहाने हावी हो रहे हैं। शिष्टाचार और सुचिता पूर्ण शब्दों में अपनी बात रखना जैसे नेतागण भूल ही गये हैं। कोई देश के प्रधानमंत्री को दरिंदा, तो कोई मौत का सौदागर कह अपनी राजनैतिक शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है। जैसे भूल ही गये हों कि देश पहले होना चाहिए और बाद में निजहित, सरकार की आलोचना करने से पहले सोच लेना चाहिए कि कहीं आप देश की साख पर तो दाग नहीं लगा रहे हैं? इस कड़ी में अरविन्द केजरीवाल, संजय निरुपम और दिग्विजय समेत कई नेता सर्जिकल स्ट्राइक पर सरकार को कमजोर करने के बहाने देश के रक्षकों के आत्मबल पर हमला कर रहे हैं। राहुल गाँधी ने तो सेना के बलिदान को खून की दलाली तक जोड़ डाला। जो बेहद शर्मनाक बयान है सरहद पर जवान हैं तो सब सुरक्षित हैं, हम सुरक्षित हैं यह देश सुरक्षित है।

पूर्व प्रधानमंत्री बाजपेई जी ने एक बार संसद में कहा था कि ''सरकारें भी आती जाती रहेगी, पार्टी भी बनती बिगड़ती रहेगी, पर यह देश रहना चाहिए इसका लोकतंत्र रहना चाहिए.'' भारत में अनेकों पार्टियां हैं जो विचारधाराओं में बंटी है, जो एक देश की एकता अखंडता के लिए जरूरी भी है। एक स्वस्थ लोकतंत्र की खुशबू भी यही है कि सबका संगम राष्ट्रहित है पर कुछेक लोग जो धर्म के नाम पर हिंसा करते हैं, मैं उन्हें धर्म और वह पार्टी जिसकी विचारधारा राष्ट्रहित में न हो उन्हें पार्टी नहीं मानता। 'यह सिर्फ एक झुण्ड है, जो अपने निजी स्वार्थ और महत्त्वाकांक्षा के लिए समाज को गन्दा कर रहे हैं।'' राजनीति के नाम पर यह निर्लजता बंद होनी चाहिए। कहते हैं- जो जैसा होता है उसे सब कुछ वैसा ही दिखाई देता है। यदि केजरीवाल को वीडियो फुटेज दिखा भी दें तो क्या गारंटी है कि वे उस पर सवाल न उठाये? और रहा पाकिस्तान का झूठ तो वीडियो देखने से पहले दोनों पाकिस्तानी शरीफों राहिल और नवाज के चेहरे देख लीजिये। भारतीय सेना के दावे का सच सीमा पार राजनीतिक गलियारे में स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

-सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

जब गुलबर्गा में आर्यों पर आक्रमण हुआ

देश-विभाजन से पूर्व गुलबर्गा में एक ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन हुआ था। निज़ामी सरकार आर्यों का विराट् रूप देखकर थर्रा उठी। आर्यों पर आक्रमण करवाया गया। आर्यनेताओं को बुलाया गया। भाई वंशीलालजी ने पण्डित विनायक रावजी को कहा भी कि दाल में कुछ काला है। आप थाने में मत जाएँ। राव साहब ने भाईजी का सुझाव न माना। पण्डित नरेन्द्रजी, पण्डित गणपतशास्त्री आदि कलेक्टर के यहाँ पहुँचे तो वहाँ निज़ाम की पुलिस ने आर्य नेताओं की भरपेट पिटाई की। पण्डित नरेन्द्रजी की तो टाँग ही तोड़ दी गई।

जब इन नेताओं को कलेक्टर का सन्देश पहुँचा, उस समय श्री भाई वंशीलालजी ने इन्हें बार-बार रोका कि वहाँ न जाएँ। यह कोई षड्यन्त्र है। इधर ये तीन महापुरुष कलेक्टर के पास गये, उधर भाई वंशीलालजी ने साथियों से कहा कि चलो यहाँ से निकलकर शोलापुर की ओर चलें। निजाम राज्य की सीमा में रहना ठीक नहीं। पण्डाल से रेलवे स्टेशन बहुत दूर था। कैसे निकलें? मार्ग में मुसलमान देख लेंगे तो निहत्थे आर्य लोगों को मार देंगे।

भाईजी ने कहा-''मुसलमानी पायजामा पहनकर निडरता से खदीकों (कसाईयों) के मुहल्ले से निकल चलो। किसी को सन्देह होगा। इस समय कोई हिन्दू उधर क्या जाएगा। साथियों ने ऐसा करना मान लिया। बड़ी निडरता से आर्य लोग मुसलमानी मुहल्लों से होते हुए स्टेशन पर पहुँच गये और वहाँ से अंग्रेजी इलाके में पहुँच गये। यह घटना मुझे भाईजी के साथ गुलबर्गा से निकलनेवाले एक आर्यवीर ने बताई थी और यह भी कहा कि यदि हम यहाँ से न निकलते तो भाईजी पकड़े जाते और हमारी भी पिटाई होती।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : **पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पाकिस्तान की असली समस्या

अमेरिकी सांसदों ने पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करने के लिए जो बिल पेश किया था उसके पक्ष में अब तक छः लाख से अधिक लोगों ने अपनी सहमति प्रकट की है। उड़ी हमले के बाद इसे भारत का सफलतम कूटनीतिक प्रयास कहा जा सकता है। हालाँकि इसके बाद हो सकता है कि अंतर्राष्ट्रीय समुदायों से पाकिस्तान के पक्ष और विपक्ष में कई तरह के बयान सामने आएं। लेकिन हर एक बयान को भारत के लिए शुभ संकेत कहा जा सकता है। क्योंकि हर एक बयान में पाकिस्तान के साथ आतंकवाद शब्द का जिक्र अवश्य होगा। यदि ऐसा होता है तो एक झूठे आभासी देश की आर्थिक स्थिति पर चोट होकर बिखरने का खतरा मंडराता सा दिखाई देगा। झूठा और आभासी क्यों कहा? तो मैं बता दूँ 14 अगस्त 1947 से विश्व मानचित्र के पटल पर उभरा पाकिस्तान दरअसल कोई देश नहीं है वह भारतीय भू-भाग का एक वह टुकड़ा है जो एक सीमा रेखा खींचकर सिर्फ दिखावे को मजहब के सहारे खड़ा हुआ था ताकि भारत से अलग हो अपने मजहब के मूल्यों की रक्षा की जा सके। समय के साथ पाकिस्तान में मजहब के मूल्यों का तो पता नहीं पर मानवीय मूल्य बिखरते जरूर नजर आये जो एक धर्म की सबसे बड़ी पूंजी होती है। पाकिस्तान में मजहब के नाम पर एक बड़ा जाल फैलता गया जो जितना बड़ा मुल्ला उसे उतनी ज्यादा दाद और इमदाद का कारोबार सा सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर चल पड़ा। जो आज पाकिस्तान को एक आतंकवादी देश के रूप में स्थापित सा करता नजर आने लगा है।

बंटवारे के बाद पाकिस्तानी शासकों की कोशिश यह थी कि हम भारतीय उपमहाद्वीप से कटकर सांस्कृतिक, धार्मिक रूप से तो मध्य एशिया के इस्लामिक देशों के पलड़े में चले जायें और राजनैतिक रूप से विश्व शक्तियों के पाले में रहकर भारत के बराबर अपनी पहचान बनाये। जिसमें वह काफी हद तक कामयाब और नाकामयाब दोनों हुए। वहां अमीर इस्लामिक देशों से धर्म के नाम पर खूब चंदा बटोरा तो रूस अमेरिका जैसी महाशक्तियों के टकराव का फायदा उठाकर हथियार। किन्तु इसका नुकसान भी पाकिस्तान को काफी उठाना पड़ा चूँकि उन्हें पाकिस्तान उस समय के भारतीय उपमहादेश से अमानत के रूप में मिला था। 1947 तक साझे इतिहास, भूगोल से बाहर आये पाकिस्तान को चाहे वह या उनकी भाषा, धर्म, कला, रहन-सहन, रीति-रिवाज, किंवदंतियाँ या मुहावरे। अपनी राष्ट्रीय आत्म-पहचान को अभिव्यक्त करने या दावेदार बनने के लिए वे जिस दिशा में भी मुड़ते, वहाँ वे भारत की लंबी गहरी छाया विद्यमान पाते गये। इस कारण वे अपने को भारत से भिन्न साबित करने के लिए तरह-तरह के अजीब साधनों एवं उपायों का सहारा लेने लगे। विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में वे इतिहास को विकृत करते गये, माने गये तथ्यों एवं आँकड़ों को तोड़-मरोड़ कर रखते गये। इसलिए उन्होंने अपने इतिहास में भारत के दुश्मन गौरी, गजनवी, मोहम्मद बिन कासिम जैसे लुटेरों को अपना आदर्श लिखना शुरू किया। इसके लिए न उन्होंने सिंध का असली इतिहास स्वीकारा ना ही बलूच लोगों का, पख्तून समुदाय की तो बात ही छोड़ दीजिये, मसलन अपने इतिहास को अन्य धर्मो खासकर हिन्दू धर्म के खिलाफ बना डाला। उन्होंने अपने इतिहास में जो घटना भारत के लिए अशुभ थी नफरत दर्शाने को उसे ही शुभ लिख दिया ताकि आने वाली पीढ़ी बंटवारे का असली कारण न पूछ पाए।

शुरुआत में तो इसका लाभ जितना सियासी जमातों को मिला उतना ही मजहबी तंजीमो को भी मिला लेकिन बाद में सियासी जमातों से ज्यादा मुल्ला मौलवियों को मिलने लगा। जिस कारण वहां का लोकतंत्र और सत्ता मजहबी रंग के रंग से पुतकर खड़ी होने लगी। जब सत्ता के ऊपर धर्म और भाषा दोनों ताकत के बल पर हावी हुई तो उसकी हानि पाकिस्तान को बांग्लादेश के रूप में उठानी भी पड़ी। क्योंकि पाकिस्तान का पाकिस्तान में भाषा और नेताओं के अलावा कुछ नहीं था। सिंध हो या करांची, बलूचिस्तान हो पख्तून इलाका सबकी अपनी अलग-अलग भाषा और, सांस्कृतिक विरासत थी जो अपने भाषाई व अन्य सांस्कृतिक परम्पराओं पर होने वाली चोट पर उखड़ने लगे जिसे सम्हालने के लिए पाकिस्तानी हुक्मरानों को सेना का सहारा लेना पड़ा। जहाँ भी राजनैतिक और मजहबी तंजीमे अपने भू अधिकार या अपनी सांस्कृतिक विरासत और भाषा के लिए खड़ी होती वहीं सेना को उतार दिया जाता। विद्रोह तो कुचला जाता पर पाकिस्तान की राजनीति में सेना का एक बड़ा हस्तक्षेप होता गया जिसने वहां फिर कई बार लोकतंत्र के मूल्यों पर भी हमला कर राजनीति कहो या लोकतंत्र को भी कैद किया, कैद के बाद यदि रिहा भी किया तो हमेशा इस शर्त पर किया कि सेना की छत्र-छाँव में ही या एक निश्चित दायरे में रहकर ही शासन का हिस्सा बनना होगा। मतलब प्रशासनिक स्तर पर सेना और सामाजिक जीवन पर मजहब हावी हो गया जिनके बीच से वहां की राजनीति गुजरने लगी। साफ कहें तो पाकिस्तान के लोगों ने बस कुछ ही पल आजादी का सूरज देखा है जिसके बाद उसे सेना और मजहब के ठेकेदारों ने अपने व्यक्तिगत सुख और आनंद के लिए पाकिस्तान की सुरक्षा का हवाला देकर हमेशा के लिए अस्त सा कर दिया।

धीरे-धीरे नफरत की शिक्षा की फसल पकनी आरम्भ हुई जो उसने विशेषकर भारत के लिए बोई थी, भारत में तो जो किया वह किया इसके बाद उसने अपने बीज पाकिस्तान में बिखेरने शुरू किये तो पाकिस्तान ने विश्व स्तर पर खुद को आतंकवाद से त्रस्त देश का रोना रोकर हर बार बच निकलने का प्रयास जारी रखा। जिसके बदले उसे अंतर्राष्ट्रीय सहानुभूति और आर्थिक सहायता राशि मिलना आरम्भ हो गयी। शीत युद्ध के दौरान या तालिबान के खात्मे के समय अमेरिका को पाकिस्तान की जमीन उपयोग करने को मिली तो पाकिस्तान को बदले में पैसा। जो उसने भारत के खिलाफ छद्म युद्ध शुरू करने और हथियार खरीदने में गवां दिया। बहरहाल यह चर्चा लम्बी है।

यदि आज वर्तमान में आये तो एक ओर पाकिस्तान का खोखला लोकतंत्र तो दूसरी और मजहबी तंजीमे तो तीसरी पाकिस्तान की सबसे बड़ी धुरी सेना बनी हुई है और इनके बीच खड़ी है पाकिस्तान की जनता जो आधुनिक शिक्षा, रोजगार जैसे मूलभूत अधिकार के लिए तरस रही है। इसी कारण चाहकर भी कोई सरकार भारत से रिश्ते मजबूत नहीं बना पाती। यदि भारत से रिश्ते मजबूत होते हैं तो भारत से पुस्तक, वीडियो एवं अन्य सांस्कृतिक सामग्रियों का आयात होता है और उन्हें भय है कि यदि ऐसे आयात पर प्रतिबंध या नियंत्रण बनाए न रखें तो उनकी खुद की पहचान बनाने की कोशिश विफल हो जाएगी जो उन्होंने 70 साल से अपने लोगों के अन्दर बनाई है। यदि भारत से सम्बन्ध मजबूत बनते हैं तो मजहब के ठेकेदारों को इमदाद मिलना कम हो जाता है। सेना को राजनीति से अपना नियन्त्रण सा खत्म होता दिखाई देने लगता है, भाषाई और सांस्कृतिक आधार पर लोग अपनी मांग तेज करने लगते है। मसलन जब भी वहां का आवाम उन्हें दरकता दिखाई देता लगता है तो उसे भारत से खतरा दिखाया जाने लगता है, कश्मीर समस्या का राग अलापा जाने लगता है, बयानबाजी के शोर में हमेशा अपने लोगों की आवाजें दबा दी जाती है जिससे सेना, मजहब और सियासत तीनों की दुकान चल उठती है. कश्मीर पाकिस्तान की कोई समस्या नहीं है बस वह अपनी समस्याओं पर पर्दा डालने के कश्मीर समस्या को उठाये रखता है। यही इस पड़ोसी के साथ राष्ट्रीय आत्म-पहचान की सबसे बड़ी समस्या है कि किसी भी तरह भारत के लिए समस्या पैदा करे, क्योंकि इसी की बदौलत पाकिस्तान एक देश के तौर पर बना रह सकता है।

-राजीव चौधरी

बोध कथा

प्यार सभी चाहते हैं

उत्तर काशी से आगे मल्ला चट्टी है, जहाँ से बूढ़े केदार को मार्ग जाता है। मुझे पता लगा कि बूढ़े केदार में एक साधु महात्मा हैं, जिन्होंने महर्षि दयानन्द को देखा था। खोज करके उनके पास गया। वे एक वृद्ध साधु हैं, नदी के तट पर कुटिया बनाकर रहते हैं। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानन्द कभी इस स्थान पर रहा करते थे। साधु ने उन्हें नहीं देखा, उनके गुरु ने देखा था। उन्होंने वह चट्टान भी दिखाई, जहाँ बैठकर महर्षि ईश्वर का भजन करते थे। मैं भी उस चट्टान पर बैठ गया। साधु बाबा अपनी कुटिया में चले गए। नदी की कल-कल छल-छल के अतिरिक्त चारों ओर सन्नाटा था, चारों ओर विशाल वन। तभी मैंने देखा कि पिछली ओर से एक बहुत बड़ा शेर चला आता है। इस नीरव वन में इतना बड़ा शेर देखकर मेरा हृदय काँप उठा। पुकारकर मैंने कहा-''स्वामी जी! शेर आ गया है।'' साधु ने कुटिया के अन्दर से आवाज़ दी-''घबराओ नहीं।''

सिंह झूमता हुआ मस्ती के साथ आगे बढ़ा। साधु ने अपनी कुटिया से बाहर आकर उसे पुकारा-''आ गये तुम?'' सिंह ने उनके चरणों में शीश झुका दिया। साधु ने उसे प्यार किया और सिंह वापस चला गया। केवल मनुष्य ही नहीं, पशु भी प्यार चाहते हैं।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनोमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण

(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778

E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

पण्डित नेहरू और आर्यसमाज

- डॉ. विवेक आर्य

पंडित नेहरू अपनी अंग्रेजों जैसी परवरिश और पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव के चलते भारतीय संस्कृति और अध्यात्म से जीवन में कभी प्रभावित नहीं रहे। यही कारण था कि वह आर्यसमाज जैसे राष्ट्रवादी आंदोलन से कभी नहीं जुड़े। एक इतिहासकार होने के बाद भी विदेशी लेखकों की मान्यताओं का नेहरू जी अंधानुसरण करते रहे। आर्यो का विदेशी होना, वेदों का गडरियों का गीत होना, वेदों में पशुबलि आदि मान्यताओं को समर्थन नेहरू जी के ऊपर पश्चिमी लेखकों के प्रभाव को प्रदर्शित करता है। आर्यसमाज के विषय में भी उनकी मान्यता पश्चिमी ईसाई लेखकों से मेल खाती है। अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया (भारत एक खोज) में आर्यसमाज के विषय में लिखा-

The Aryasamaj was a Reaction to the Influence of Islam and Christianity' more especially the former. It was a crusading and reforming movement from within' as well as a defensive organisation for protection against eternal attacks. It introduced proselytization into Hinduism and thus tended to come into conflict with other proselytizing religions. The Aryasamaj which has been a close approach to Islam, tended to become a defender of everything Hindu, against what it considered as the encroachments of other faith.

Ref Page No- 335-336 Discovery of India by Jawahar Lal Nehru.

नेहरू जी आर्यसमाज को इस्लाम और ईसाइयत के विरुद्ध प्रतिक्रिया मात्र मानते थे। नेहरू जी आर्यसमाज को एक इस्लाम और ईसाइयत के समान सांप्रदायिक संगठन मानते थे। नेहरू जी की यही मान्यता गलत थी कि आर्यसमाज एक सांप्रदायिक संगठन है जो इस्लाम और ईसाइयत के विरुद्ध खड़ा हुआ है। नेहरू जी की आर्यसमाज के विषय में यह मान्यता विदेशी ईसाई लेखकों की सोच पर आधारित थी क्योंकि आर्यसमाज ने उनके भारत को ईसाई बनाने के स्वप्न को धूमिल कर दिया था। नेहरू जी ने स्वामी दयानंद द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश में दी गई भूमिका को भी ध्यान से पढ़ा और समझा होता तो उनकी आर्यसमाज के विषय में गलत धारणा कभी न बनती।

स्वामी दयानंद जी महाराज सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में स्वयं लिखते हैं कि-

''यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़ सर्व तंत्र सिद्धांत अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्ते-वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़ कर अनेक विविध दु:खों की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जोकि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दु:ख सागर में डुबा दिया है।''

खेद है कि नेहरू जी की आर्यसमाज के विषय में नकारात्मक छवि जीवन पर्यन्त बनी रही। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखपत्र पाञ्चजन्य के 24 अगस्त ,1959 के अंक का एक पुराना संस्मरण 'इतिहास के पन्नों से' शीर्षक के नाम से 25 सितम्बर, 2016 को प्रकाशित हुआ है। इस अंक में एक पुराना संस्मरण इस प्रकार से दिया गया है-

'आर्यसमाज को सांप्रदायिक कह देने पर उन्हें (नेहरू जी) पंजाब के एम.एल. सी. श्री वीरेंदर ने चुनौती दी और पंडित जी को लिखित रूप में स्पष्टीकरण देना पड़ा।'

इस घटना से निष्कर्ष निकलता है कि श्री वीरेंदर जी प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता ने 1959 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू जी से आर्यसमाज को सांप्रदायिक कहने पर लिखित रूप से माफीनामा लिखवाया था।

इससे यही सिद्ध होता है कि आर्यसमाजी नेता सिद्धांत के लिए कितने पक्के थे और नेहरू जैसों से माफीनामा लिखवाना उनके व्यक्तित्व और प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

> ***......नेहरू जी की यही मान्यता गलत थी कि आर्यसमाज एक सांप्रदायिक संगठन है जो इस्लाम और ईसाइयत के विरुद्ध खड़ा हुआ है। नेहरू जी की आर्यसमाज के विषय में यह मान्यता विदेशी ईसाई लेखकों की सोच पर आधारित थी। क्योंकि आर्यसमाज ने उनके भारत को ईसाई बनाने के स्वप्न को धूमिल कर दिया था। नेहरू जी ने स्वामी दयानंद द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश में दी गई भूमिका को भी ध्यान से पढ़ा और समझा होता तो उनकी आर्यसमाज के विषय में गलत धारणा कभी न बनती।.....***

प्रेरक कथा

दूध का कर्ज

कत्लखाने के बाहर खूटे में बंधी एक गाय ने पास खड़े अपने बछड़े से कहा कि 'बेटा आज रात में तू हमारा जितना दूध पीना चाहे पी ले क्योंकि कल सूर्योदय के साथ ही कसाई मेरी हत्या कर मेरे शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर उसे डिब्बे में भरकर विदेश भेज देंगे।'

इतना सुनकर बछड़े ने अपनी मां से कहा कि 'मां आखिर वे ऐसा क्यों करेंगे जबकि तुमने तो अपना दूध उन्हें भी पिलाया है?'

इस पर गाय ने जवाब दिया 'हां हमने तो अपना दूध सबों को बिना भेद-भाव के दिलाया है, उस कसाई को भी जो कल सुबह हमारा कत्ल करेंगें। मेरा दूध पीकर ही वे बल, विद्या, बुद्धि और शक्ति अर्जित कर पाये हैं, पर बेटा वे मनुष्य हैं। उन्हें मनुष्य इसलिए कहा गया है क्योंकि वे मननशील हैं पर उनमें अब मनन करने की शक्ति ही समाप्त हो गई है इसलिए वे कुछ भी कर सकते हैं।'

इतना सुनकर बछड़े ने कहा कि क्या इसीलिए वे मुझे भी यहां लाये हैं उन्हें हमारे बचपना पर भी कुछ तरस नहीं आया, मैं तो तैयार हो रहा था हल चलाकर उनके खेतों को फसलों से लहलहाने को।'

तब गाय ने कहा कि बेटा उसके कई कारण हैं पहला कारण तो यह है कि अब उन्हें खेती में तुम्हारी जरूरत नहीं रह गई क्योंकि तुम्हारा स्थान ट्रैक्टर ने ले लिया है और दूसरा कारण यह है कि वे तुम्हारे कोमल और मुलायम चमड़े से क्रोम के जूते बनाकर अधिक मुनाफा अर्जित करेंगे और तीसरा एवं सबसे बड़ा कारण यह है कि तुम बछड़ी नहीं बछड़ा हो अगर तुम बछड़ी होते तो वे तुम्हें हरगिज यहां नहीं भेजते बल्कि बड़े ही लाड़ प्यार से तुम्हें पालते ताकि तुम्हारे दूध और बच्चे से लम्बे समय तक वे व्यापार कर सकें क्योंकि वे बहुत ही स्वार्थी हैं इसीलिए चन्द पैसों के लालच में तुम्हें भी यहां भिजवा दिया है।

तब बछड़े ने निराश होकर पूछा 'मां क्या हमारी कोई सुनने वाला नहीं है?'

तब गाय ने कहा कि 'नहीं हमारी कोई सुनने वाला नहीं है क्योंकि मानवाधिकार आयोग जैसा हमारा कोई आयोग नहीं है और न ही कोई न्यायालय ही ऐसा है जहां हम अपनी फरियाद कर सकें। हां एक न्यायालय ऐसा जरूर है जहां हमारी फरियाद भी सुनी जायेगी और दोषी दंडित भी किये जायेंगे।' तब बछड़े ने एक बार फिर पूछा कि 'अच्छा यह तो बताओ कि क्या इसका दुष्परिणाम उन्हें कुछ भी नहीं मिलता?'

इस पर गाय ने कहा कि दुष्परिणाम मिलता क्यों नहीं अवश्य ही मिलता है। दुनिया के सभी प्राणी अपने-अपने स्वाभाविक आहार के अलावा बड़ी तेजी से मांसाहार की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। हम तो केवल एक बार कत्ल किये जायेंगे पर उन्हें तो लम्बे समय तक नरक जैसी यातना भोगनी पड़ रही है।'

आज का मनुष्य मुर्गियों का खून पीकर अपना खून बढ़ाना चाहता है एवं हम जैसे जानवरों के मांस को खाकर अपनी ताकत बढ़ाना चाहता है पर उन्हें मिलता क्या है। इन्हीं सब चीजों को खाकर वे नित नये-नये रोगों से ग्रसित हो जाते हैं और अल्प आयु में मृत्यु का भी ग्रास बन जाते हैं।

वेद ने मनुष्य को 100 वर्ष जीने का अधिकार दिया है पर प्रकृति के विरुद्ध आचरण करने से वे कम समय तक ही जी पाते हैं। आज स्थिति क्या है स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन का मूलाधार है शाकाहार पर वे जिस तेजी से मांस-भक्षण करके नई-नई बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं उन्हीं से सारे अस्पताल पटे पड़े हैं, प्राईवेट डाक्टरों के यहां उनकी लम्बी लाईन लगी हुई है और इससे बहुत ज्यादा संख्या में एवं अपने घरों में रोग शैय्या पर पड़े-पड़े मृत्यु की वाट जोह रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने भी चेतावनी दी है कि मनुष्य के शरीर में होने वाली बीमारियों में से 159 गम्भीर बीमारियां ऐसी हैं जिसका कारण है मांसाहार। हमारे यहां बहुत बड़े पैमाने पर गौ हत्या होने की वजह से उनके बच्चे दूध के बिना विलख रहे हैं और कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। आज पूरे विश्व में भूखा और कुपोषण की वजह से उनके 5 वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु 40 हजार प्रतिदिन हो रही है। फिर भी (W.H.O.) की इस चेतावनी का भी उनपर कोई असर नहीं पड़ रहा है आखिर क्यों? मतलब साफ है कि चाहे जो भी भोगना पड़े पर वे अपनी लाईफ स्टाइल में कोई परिवर्तन नहीं चाहते।

तब बछड़े ने अपनी मां से पूछा कि 'इतना सब कुछ देखकर भी तुम्हें उनसे शिकायत नहीं है?'

तब गाय ने जवाब दिया कि 'नहीं मुझे उन पर तरस अवश्य आता है पर कोई शिकायत नहीं है क्योंकि मैं गौ माता हूं *विधाता ने मुझे विश्व माता का दर्जा दिया है इसीलिए मैं मरकर भी उनका कल्याण चाहती हूं। जब वे औलाद की हत्या बेझिझक कर सकते हैं तो कुछ भी कर सकते हैं। आज प्रतिदिन लाखों की संख्या में वे अपनी ही संतान की हत्या बिना जन्म लिये ही, गर्भ में ही कर देते हैं तो फिर भला मैं कौन हूं।'*

हां मुझे शिकायत है अपने उन कथित गौ भक्तों से जो गौ माता की जय जैसे नारों से पूरे वातावरण को गुंजायमान करते हैं।, मंदिरों में स्थापित मेरी मूर्तियों पर अक्षत और फूल चढ़ाते नहीं थकते वे भी मुझे कत्लखानों तक भिजवाने से नहीं हिचकिचाते। क्या यही है मेरे दूध का कर्ज जिसे वे इस प्रकार चुकता कर रहे हैं।'

-राजेन्द्र प्रसाद आर्य,
प्रचार मंत्री, आर्य समाज मुजफ्फरपुर

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

परोपकारिणी सभा के यशस्वी....

सुरेश चन्द्र आर्य, प्रकाश आर्य, विनय आर्य , हिमाचल के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, राजेन्द्र विद्यालंकार, शत्रुघ्न सिंह आर्य (रांची), दीनदयाल गुप्त (कोलकाता), ओम प्रकाश गोयल (पानीपत) के साथ-साथ अनेक प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों एवं राजस्थान की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी अजमेर पहुंचे। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान एवं अनेक संस्थाओं के प्रमुख महाशय धर्मपाल जी ने भी शोक सन्देश भेजा।

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य आर्य जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डॉ. धर्मवीर आर्य जी पैतृक रूप से महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के प्रति समर्पित कार्यकर्ता रहे हैं। परिवार में प्राप्त संस्कार और विचारों से ही उनके कोमल हृदय में महर्षि दयानन्द के प्रति प्रेम एवं लगाव का बीज अंकुरित हुआ। उसी अंकुरण के कारण उन्हें महर्षि दयानन्द जी के क्रमश: उत्तराधिकारी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विभिन्न पदों पर रहते हुए डॉ. धर्मवीर जी ने परोपकारिणी सभा की जो सेवा की उसके लिए हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। उनके नेतृत्व में परोपकारिणी सभा ने जिन ऊंचाइयों को स्पर्श किया है, वह आपके तेज और कार्यकुशलता का परिचायक है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि डॉ. धर्मवीर जी जैसे प्रभावशाली व्यक्ति का हमारे बीचे से जाना आर्यसमाज की अपूर्णीय क्षति है।

इस अवसर पर अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने डॉ. धर्मवीर जी को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि देते हुए उनके कार्यों का स्मरण किया।

डॉ. धर्मवीर जी के पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार। सम्बोधित करते श्री प्रकाश आर्य जी। इस अवसर पर उपस्थित श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं श्री धर्मपाल आर्य।

पटियाला (पंजाब) में राष्ट्रीय पुस्तक मेला सम्पन्न : दिल्ली सभा ने किया वैदिक साहित्य का प्रचार

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा राष्ट्रीय पुस्तक मेलों की श्रृंखला के अन्तर्गत पंजाब के पटियाला जिला स्थित पंजाबी विश्वविद्यालय, में दिनांक 3 अक्टूबर से 9 अक्टूबर के मध्य पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने वैदिक साहित्य के प्रचारार्थ पूर्व निर्धारित नीति के अनुसार इस पुस्तक मेले में भी वैदिक साहित्य पुस्तक स्टाल आरक्षित कराने का निर्णय लिया और स्टाल बुक कराया। स्टाल का उद्घाटन आर्य समाज पटियाला के प्रधान श्री राज कुमार सिंगला जी ने रिबन काटकर किया। प्रधान जी के साथ आर्य समाज पटियाला के मंत्री वेद प्रकाश तुली व श्री रमेश चन्द्र गाडोत्रा व दिल्ली सभा प्रतिनिधि मौजदू थे। दिल्ली सभा के प्रतिनिधि श्री रवि प्रकाश ने बताया कि वैदिक पुस्तक स्टाल पर सर्वाधिक भीड़ महिलाओं व युवावर्ग की रही जिन्होंने बड़ी संख्या में वैदिक साहित्य खरीदा।

विश्वविद्यालयों एवं आई.आई.टी. कानपुर में सजेंगे वैदिक साहित्य के स्टाल : अक्टूबर महीने में आर्यसमाज जमीनी स्तर पर वैदिक पुस्तकों का प्रचार करने के नए कीर्तिमान स्थापित करेगा। आर्यसमाजों से निकलकर पुस्तक मेलों के माध्यम से शिक्षित वर्ग में वैदिक साहित्य के प्रचार की कड़ी में अक्टूबर महीने में देश के तीन विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रचार किया जायेगा। 1. पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला में दिनांक 3 अक्टूबर से 9 अक्टूबर को वैदिक साहित्य पुस्तक मेले का आयोजन सम्पन्न। 2. कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर,उत्तरांचल में दिनांक 17 अक्टूबर से 20 अक्टूबर को वैदिक साहित्य पुस्तक मेले का आयोजन 3. आई. आई. टी, कानपुर में दिनांक 20 अक्टूबर से 23 अक्टूबर को वैदिक साहित्य पुस्तक मेले का आयोजन। पुस्तक मेलों में भाग लेने का उद्देश्य समाज के उस वर्ग तक स्वामी दयानंद और वेदों के सिद्धांतों को पहुँचाना है जो इनसे पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं। आप भी इस महान कार्य में सहभागी बनेंगे। **-डॉ. विवेक आर्य**

अंडमान निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रचार

अंडमान निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में आठ दिवसीय वेद प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। 8 दिवसीय समारोह में इंजीनियरिंग कॉलेज एवं आई.टी.आई. कॉलेज के छात्र- छात्राओं को बर्मानाला के विशाल हॉल में धर्म विषयक उपदेश व वेद प्रवचन एवं सत्यार्थ प्रकाश की विषय वस्तु पर प्रकाश डाला गया।

इस अवसर पर आचार्य श्री पुरुषार्थी जी ने अंडमान निकोबार में आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए डॉ. सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी, श्री सुरेश आर्य जी एवं श्री आर.एस. पाण्डेय जी को जिम्मेदारी देते हुए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी से फोन पर सम्पर्क कराया। श्री प्रकाश आर्य जी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आर्यसमाज की स्थापना में हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

अन्दमान निकोबार के राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी जी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते आचार्य आनन्द पुरुषार्थी।

29 सितम्बर को आचार्य जी के साथ नवनियुक्त पदाधिकारियों का एक शिष्ट मण्डल राजभवन में उपराज्यपाल डॉ. जगदीश मुखी जी से मिला और उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर आर्य समाज के लिए एक भू खण्ड देने का आग्रह किया। डॉ. मुखी जी ने आवेदन आने पर विचार करने का आश्वासन दिया।

-सुरेश कुमार आर्य

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों की सूचनार्थ है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ '**मैं आर्य समाजी कैसे बना**' प्रारम्भ किया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने हैं।

यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिख भेजिए हमारा पता है-

'आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 या aryasabha@yahoo.com द्वारा ईमेल से भी भेज सकते हैं। *-सम्पादक*

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Inner Cosmic Sun

"O rays of the inner Cosmic Sun and Lightning, the diligent devotees who know the right path of living and are well-versed in the melody of divine symphony, I invoke both of you. I, too, beseech you for getting super nourishment."

"O rays of the inner Cosmic Sun and Lightning, in you, vigour and food are abiding together; may you promote our vital powers and multiply our mental faculties. May you shower your bounty on us who are seekers of wisdom and vitality."

प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः।
इन्द्राग्नी इष आ वृणे।। (Sv.1575)

Pra vamarcantyukthino nithavido jaritarah.
indragni isa a vrne..

इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च।
युवोरप्तूर्यं हितम्।। (Sv.1578)

Indragni tavisani vam sadhasthani prayansi ca.
yovor ap turyam hitam..

The Long-tongued Dog

"O friends, please drive away far from here the long-tongued dog, the greedy one, who is prying to spoil the exhilarating divine elixir meant fot the devout dedication."

The dog comes to the altar of sacriflce and defiles the articles by licking the same. It creates a very nasty and despicable situation there. The verse says : Greed and sensual cravings destroy the sanctity of sacrifice. Dedication is the soul of Yajna. To alleviate the suffering of others by sacrificing one's own comforts is Yajna.

O man! forsake the evil habit of a dog. May the vulture of greed disappear from your heart. Win the heart of everyone with love. When you go to a battle field to destroy the evils, that war is your Yajna. After gaining victory in the war to wish well for the defeated may also be Yajna for you. The true hero never oppresses the defeated being madly excited with joy over victory.

O man! behave like a lion. Do not act in a despicable manner like a dog. Do never spread terror. To wipe out injustice is your duty. Act like a victorious lion.

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम्।। (Sv.697)

Purojiti vo andhasah sutaya madayitnave.
apa svanam snathistana sakhayo dirghajihvayam..

When the hand Speaks

The Vedic verse says : "O man ! do speak through hands, This means you should be expert in doing work just as you are conversant with speaking words. He who performs the job finds his prayer to be fruitful. God cares more for the behaviour of a person than his utterances and recitations."

When we adress God as our kind Lord and offer prayers, it should be borne in mind that we should ourselves be kind. A cruel person may praise the gift of the Lord whole day but he does not really gain anything by that. When we pray for getting justice from our Lord, the prayer is accepted if we ourselves try to be just in our speech and action.

Our speech and advice become effective through our own behaviour and action. In auspicious festivals like marriage we sing devotional songs and pray to God for protection, but we take recourse to deeds of violence like killings of animals to satisfy our sensual pleasure. Our work is seen, appreciated and followed by others only when we act as per our words. A devotee gets up from bed very late in the morning and sits for prayer, "O Lord, listen to my prayers this morning. 'Such prayer is rejected by the Lord. A devotee with false prayers continues to remain an unfortunate and useless person.

इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्। नि यामं चित्रमृञ्जते।। (Sv.135)

Iheva srnva esam kasa hastesu yadvadan.
ni yamam citramrnjate.

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 13 : पुनरावृत्ति कार्य

-आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

गतांक से आगे....

'गम् (Go) लट् लकार (Present Tense)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	सः (पु०)	तौ (पु०)	ते (पु०)
	सा (स्त्री०)	ते (स्त्री०)	ताः (स्त्री०)
	तत् (न०)	ते (न०)	तानि (न०)
मध्यम	त्वम्	युवाम्	युयम्
उत्तम	अहम्	आवाम्	वयम्

गम् धातु - गम् एक धातु है। धातु को आप एक मूल शब्द की तरह समझिए। इस एक गम् शब्द से बहुत सारे शब्द बनाए जा सकते हैं। जैसे गच्छामि, गच्छसि, गच्छति, आच्छामि आदि। ये सब शब्द धातु के पहले उपसर्ग (Prefix) और प्रत्यय (Suffix) लगाने से बने हैं। इसी प्रकार हम दो या दो से अधिक धातुओं को मिलाकर और फिर उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर अनेकों अनेक शब्द बना सकते हैं। फिलहाल के लिए इस स्पष्टीकरण को समझें, धातु के ऊपर हम फिर विस्तार से चर्चा करेंगे।

वचन : संस्कृत वाक्य बनाने से पहले हम एक बार वचनों को देखते हैं।

एकवचन : जब बात किसी एक व्यक्ति या एक वस्तु के बारे में की जा रही हो तो एकवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे ''वह जाता है।'', ''यह खाता है।'', ''बालिका पढ़ती है।'', ''गाड़ी चलती है।''

द्विवचन : जब बात किन्हीं दो व्यक्तियों या वस्तुओं के बारे में की जा रही हों तो द्विवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे ''दो लोग जाते हैं।'', ''दो लोग खाते हैं।'', ''दो बालिका पढ़ती हैं।'', ''दो गाड़ियाँ चलती हैं।''

''तौ'' द्विवचन है, यह 2 का अभिप्राय प्रकट करता है। यह प्रथम पुरुष के लिए प्रयोग किया जाता है। "तौ गच्छतः" अर्थात् वह दोनो जाते हैं।

बहुवचन : जब बात 2 से अधिक जनों या चीजों की की जा रही हो तो बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे ''बहुत लोग जाते हैं।'', ''बहुत लोग खाते हैं।'', 'बहुत बालिका पढती हैं।', 'बहुत गाड़ियाँ चलती हैं।'

'ते' बहुवचन है, यह 2 से अधिक का अभिप्राय प्रकट करता है। यह प्रथम पुरुष के लिए प्रयोग किया जाता है। ''ते गच्छतः'' अर्थात् वह सब जाते हैं।

संस्कृत वाक्य

आवां गच्छावः - हम दो जाते हैं। आवां और गच्छावः दोनों ही द्विवचन और उत्तम पुरुष में आते हैं। सर्वनाम और क्रिया, वचन और पुरुष दोनों एक दूसरे के लिए संगत या अनुकूल होने चाहिए।

वयं गच्छामः - हम सब जाते हैं। यह दोनों वयं और गच्छामः बहुवचन हैं।

युवां गच्छथः - तुम दोनों जाते हो।

युयं गच्छथ - तुम सब जाते हो।

तौ गच्छतः - तुम दोनों (पुलिङ्ग) जाते हो।

ते गच्छतः - तुम दोनों (स्त्रीलिङ्ग/नपुसंकलिङ्ग) जाते हो। 'ते' दोनों स्त्रीलिंग और नपुसंकलिंग में द्विवचन के लिए इस्तेमाल होता है या बहुवचन में पुल्लिंग के लिए भी इस्तेमाल होता है।

ते गच्छन्ति - वह सब(पुल्लिग) जाते हैं।

ताः गच्छन्ति - वह सब (स्त्रीलिंग) जातीं हैं।

तानि गच्छन्ति - वह सब(नपुसंकलिंग) जाते हैं।

धातु	**उ. पुरुष एकवचन**		**प्र.पुरुष - एकवचन**	
वद्	वदामि	मैं बोलता हूँ।	वदति	वह बोलता है।
पठ्	पठामि	मैं पढ़ता हूँ।	पठति	वह पढ़ता है।
खाद्	खादामि	मैं खाता हूँ।	खादति	वह खाता है।
लिख्	लिखामि	मैं लिखता हूँ।	लिखति	वह लिखता है।
हस्	हसामि	मैं हंसता हूँ।	हसति	वह हंसता है।
रक्ष्	रक्षामि	मैं रक्षा करता हूँ।	रक्षति	वह रक्षा करता है।
नम्	नमामि	मैं नमता हूँ।	नमति	वह नमता है।
पा (पिब)	पिबामि	मैं पीता हूँ।	पिबति	वह पीता है।
दृश् (पश्य)	पश्यामि	मैं देखता हूँ।	पश्यति	वह देखता है।

संस्कृत पाठ की इस श्रृंखला में नीचे दी गई तालिका में कुछ और वाक्य सिखाए गए हैं। यह वाक्य ऊपर दी गई धातुओं के इस्तेमाल करके ही बनाए गए हैं। आप खुद भी ऐसे ही क्रमरहित वाक्य बनाने का प्रयास करें। यह करने से आपकी संस्कृत भाषा पर पकड़ मजबूत होगी।

संस्कृत	**हिन्दी**
त्वम् वदसि	तुम बोलते हो।
तै वदन्ति	वह सब बोलते हैं।
सा वदति	वह बोलती है। (स्त्रीलिङ्ग)
युयम् वदथ	तुम सब बोलते हो।
त्वम् पठसि	तुम पढ़ते हो।
युवाम् पठथः	तुम दोनों पढ़ते हो।
ते पठतः	वह दोनों पढ़तीं हैं। (स्त्रीलिङ्ग)
युयम् पठथ	तुम सब पढ़ते हो।
तत् खादति	वह खाता है। (नपुसंकलिङ्ग)
तानि खादन्ति	वह सब खाते हैं। (नपुसंकलिङ्ग)
वयम् लिखामः	हम सब लिखते हैं।
आवाम् लिखावः	हम दोनों लिखते हैं।
ते हसन्ति	वह सब हसते हैं।
ताः हसन्ति	वह सब हंसती हैं।(स्त्रीलिङ्ग)
सः रक्षति	वह रक्षा करता है।
युयम् रक्षथ	तुम सब रक्षा करते हो।
तानि रक्षन्ति	वह सब रक्षा करते हैं। (नपुसंक)
त्वम् रक्षसि	तुम रक्षा करते हो।
आवाम् नामावः	हम दोनों नमते हैं।
युवाम् नमथः	तुम दोनों नमते हो।
सा पिबति	वह पीती है। (स्त्रीलिङ्ग)
ते पिबतः	वह दोनों पीती हैं।
तानि पश्यन्ति	वह सब देखते हैं। (नपुसंकलिङ्ग)
तत् पश्यति	वह देखता है। (नपुसंकलिङ्ग)

इसी तरह हम कुछ कुछ धातुओं को लेकर वाक्य भी बनाते जाएँगे और नए शब्द भी सीखते जाएँगे। निरंतर अभ्यास करें चाहे हर दिन कम समय के लिए ही, ध्यान रहे कि किसी भी भाषा के शुरुआत में आपको रोज अभ्यास करना होगा, अगर ज्यादा अन्तराल तक अभ्यास न किया गया तो आप सब भूल जाएँगे और फिर से शुरू से शुरुआत करनी होगी। ध्यान रहे कि मेहनत का फल मीठा होता है।

- *क्रमशः*

आर्य समाज राधापुरी का

61वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज राधापुरी दिल्ली का 61वां वार्षिकोत्सव 2 अक्टूबर 2016 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें बच्चों ने मंत्र पाठ, भजन इत्यादि सुनाए। पं. उदय भानु शास्त्री जी के प्रवचन एवं श्रीमती सुवर्धा भाटिया जी के मधुर भजनों ने समाबांध दी। श्री प्रवीण भाटिया, प्रिंसपल, दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार के कर कमलों द्वारा वैदिक पुस्तकालय का शुभारम्भ किया गया।

-ऋषि राज वर्मा, मंत्री

आर्य समाज अजमेर का

135वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अजमेर 12 से 16 अक्टूबर 2016 के मध्य 135वां वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ आयोजित कर रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के विभिन्न मूर्धन्य प्रकाण्ड विद्वान एवं महोपदेशक पधार रहे हैं।

-चन्द्राम आर्य, मंत्री

आर्य समाज गांधीधाम का

63वां वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज गांधीधाम 16 से 18 दिसम्बर 2016 के मध्य 63वां वार्षिक अधिवेशन 'दयानन्द आर्य वैदिक पब्लिक स्कूल' प्रांगण में आयोजित कर रहा है। सभा के इस अधिवेशन में विविध सम्मेलन, गोष्ठियां, पुरस्कार वितरण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ आध्यामिक यज्ञ होगा।

-गुरुदत्त शर्मा, महामंत्री

आर्य समाज कोलकाता का

131 वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कोलकाता अपना 131वां वार्षिकोत्सव 24 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम में आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा, आचार्य डॉ. शिवदत्त पाण्डेय एवं श्री नरेश दत्त आर्य (भजनोपदेशक) पधार रहे हैं।

-मंत्री

आर्यसमाज यमुना विहार में

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज यमुना विहार ब्लॉक बी-1, दिल्ली में दिनांक 13 से 16 अक्टूबर 2016 के मध्य वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन कर रहा है। जिसके अन्तर्गत सामवेदीय यज्ञ, प्रवचन व भक्ति संगीत का आयोजन किया जाएगा।

-योगेश शास्त्री, मंत्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी सर्वानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव का आयोजन

आर्य समाज दीनानगर में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी सर्वानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव 25 से 30 अक्टूबर 2016 को मनाया रहा है। इस अवसर पर आयोजित शोभायात्रा के मुख्य अतिथि श्री अशोक चौधरीजी होंगे।

-रमेश महाजन, मंत्री

खेद प्रकाश

तकनीकी खराबी के कारण आर्य सन्देश का अंक 48 प्रकाशित नहीं हो सका जिसके लिए हमें खेद है। *-सम्पादक*

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। *- सम्पादक*

गुरुकुल रोहतक का

रजत जयन्ती महोत्सव

गुरुकुल भैयापुर लाढौत रोड, रोहतक दिनांक 15 व 16 अक्टूबर 2016 को अपना रजत जयन्ती महोत्सव आयोजित कर रहा है। इस अवसर पर भजन मण्डलियों एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम होंगे। *-प्रचारक*

सान्ताक्रुज में

वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रूज (प.) मुम्बई द्वारा दिनांक 26 से 28 अगस्त 2016 के मध्य समाज के सभागार में वेद प्रचार समारोह ऋग्वेद यज्ञ के साथ आयोजित किया गया यज्ञ ब्रह्मा एवं वक्ता डॉ. सोमदेव शास्त्री जी थे। यज्ञ में वेदपाठी पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री, पं प्रभारंजन पाठक एवं पं. नचिकेता शास्त्री थे। प्रवचन डॉ. सोमदेव शास्त्री एवं भजन श्रीमती स्नेह पुरी एवं श्री प्रभाकर शर्मा जी ने प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता भी डॉ. सोमदेव जी ने की।

-संगीत आर्य, महामन्त्री

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा वर्ष 2017 के लिए

पुरस्कारों की घोषणा

आर्य समाज सान्ताक्रूज द्वारा वेद वेदांग, वेदोपदेशक, श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य, श्रीमती लीलावती महाशय "आर्य महिला पुरस्कार" पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति, श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक, श्री राज कुमार कोहली वरिष्ठ विद्वान, श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला, श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता, श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता, श्रीमती शिवराजवती आर्या "बाल पुरस्कार" श्री हरभगवान दास गांधी "मेधावी छात्र पुरस्कार", स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान, स्व. नारायण दास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग, कैप्टन देवरत्न आर्य संगठनवीर पुरस्कारों को प्रदान करने के लिए योग्य सेवाकर्मियों का चयन कर रही है। विस्तृत जानकारी के लिए श्री संगीत आर्य जी संयोजक पुरस्कार समिति आर्य समाज सान्ताक्रूज, मुम्बई से सम्पर्क करें। दूरभाष : 2660 2800/2293 1518 *-संयोजक*

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

शोक समाचार

श्रीमती शकुन्तला चौधरी का निधन

आर्य समाज पश्चिम बिहार की संरक्षिका श्रीमती शकुन्तला चौधरी की 86 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। श्रीमती चौधरी के पिता श्री मोहन लाल तथा भाई श्री मदन मोहन शास्त्री आर्य समाज मालवीय नगर के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। श्रीमती चौधरी एक लोकप्रिय अध्यापिका थीं। आपने अध्यापन क्षेत्र में मिले पुरस्कार की राशि निर्धन बच्चों को समर्पित कर दी थी। निर्धन कन्याओं के विवाह में भी वह आर्थिक सहायता आगे बढ़कर किया करती थीं। 22 सितम्बर 2016 को आर्य समाज पश्चिम बिहार में हुई श्रद्धांजलि सभा में उनकी पुत्री को पगड़ी पहना कर समाज के सामने आदर्श उपस्थित किया। श्रद्धांजलि सभा में आर्य समाज पश्चिम विहार व आर्य समाज पश्चिमपुरी के विभिन्न पदाधिकारी मौजूद थे।

श्री ओम प्रकाश मान का निधन

आर्य समाज बी.जे. पश्चिम शालीमार बाग के प्रधान श्री ओम प्रकाश मान जी का 28 सितम्बर, 2016 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 9 अक्तूबर को आर्यसमाज शालीमार बाग मे सम्पन्न हुई। जिसमें आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री महावीर बत्रा का निधन

आर्य समाज आदर्श नगर के वरिष्ठ सदस्य श्री महावीर बत्रा जी का दिनांक 12 अक्टूबर, 2016 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार आजादपुर स्थित शमशान घाट पर किया गया, जिसमें अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य वधु चाहिएं

उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के तीन युवकों के लिए सुन्दर, शाकाहारी, आर्य विचारों वाली, आर्य परिवार की कन्याएं चाहिए। जाति बन्धन कोई नहीं।

30 वर्षीय, 5'-10'' M.A. P.H.D., 10 Lac P.A., Yoga Teacher (Mumbai)
27 वर्षीय, 5'-8'', M.A. M.ed., 10 Lac P.A., Yoga Teacher (Mumbai)
25 वर्षीय, 5'-9'', Working with N.D.R.F. in Cuttak, 5 Lac P.A.

इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें:-

- श्री राम मूरत आर्य,

रेलवे क्रासिंग मालीपुर, अम्बेडकर नगर मो. 9415535059, 7666666991

वैवाहिक विज्ञापन

वधू चाहिए

आर्य परिवार का सुन्दर, पतला, गोरा, शुद्ध शाकाहारी, गर्ग अग्रवाल लड़का 28 जून 90, 7.10 बजे अम्बाला। कद 5'-9'', B.Tec (CSE) Working in Gurgaon MNC, Sr. Software Developer, 8 Lac PA, के लिए सुन्दर, गोरी, पतली, कार्यरत, आर्य परिवार की कन्या चाहिए। इच्छुक व्यक्ति फोटो बायोडाटा भेजें। **सम्पर्क : 094161-87411**

Email : arya.travels01@gmail.com

- शिव आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज बराड़ा, अम्बाला (हरि.)

सोमवार 10 अक्टूबर, 2016 से रविवार 16 अक्टूबर, 2016
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13/14 अक्टूबर, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 अक्टूबर, 2016

ओ३म् ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से

133वाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव

का भव्य आयोजन

रविवार, 30 अक्टूबर 2016

यज्ञ : प्रात: 8.00 बजे
श्रद्धाञ्जलि सभा : मध्याह्न 12.00 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड), नई दिल्ली-२

इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।
समय पर आयोजन स्थल पर पहुंचकर कार्यक्रम की सफलता में योगदान दें।

इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती "वैदिक विद्वान् पुरस्कार", डॉ॰ मुमुक्षु आर्य एवं पं॰ गुरूदत्त विद्यार्थी स्मृति पुरस्कार" प्रदान किये जायेंगे।

-: निवेदक :-

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य (पंजी.)
15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें-

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **16वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन** आर्यसमाज धामावाला देहरादून उत्तराखण्ड में 6 नवम्बर 2016 को तथा **17वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 15 जनवरी, 2017 को आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

इससे पूर्व अभी तक सम्पन्न हुए 15 सम्मेलनों के आशातीत एवं सार्थक परिणाम सामने आए हैं। आर्य परिवार परिचय सम्मेलनों को लेकर आर्य जनों में काफी उत्साह है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिएं जिससे प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। पंजीकरण फार्म इसी पृष्ठ पर प्रकाशित किया गया है। फार्म की फोटोप्रति भी मान्य है। पंजीकरण फॉर्म को सभा की वेबसाईट **www.thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किया जा सकता हैं तथा **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन भरकर पंजीकरण** भी कराए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक(**मो. 9414187428**)
एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (**मो. 9540040324**)
डॉ. विनय विद्यालंकार, संयोजक, (**मो. 09412042430**)

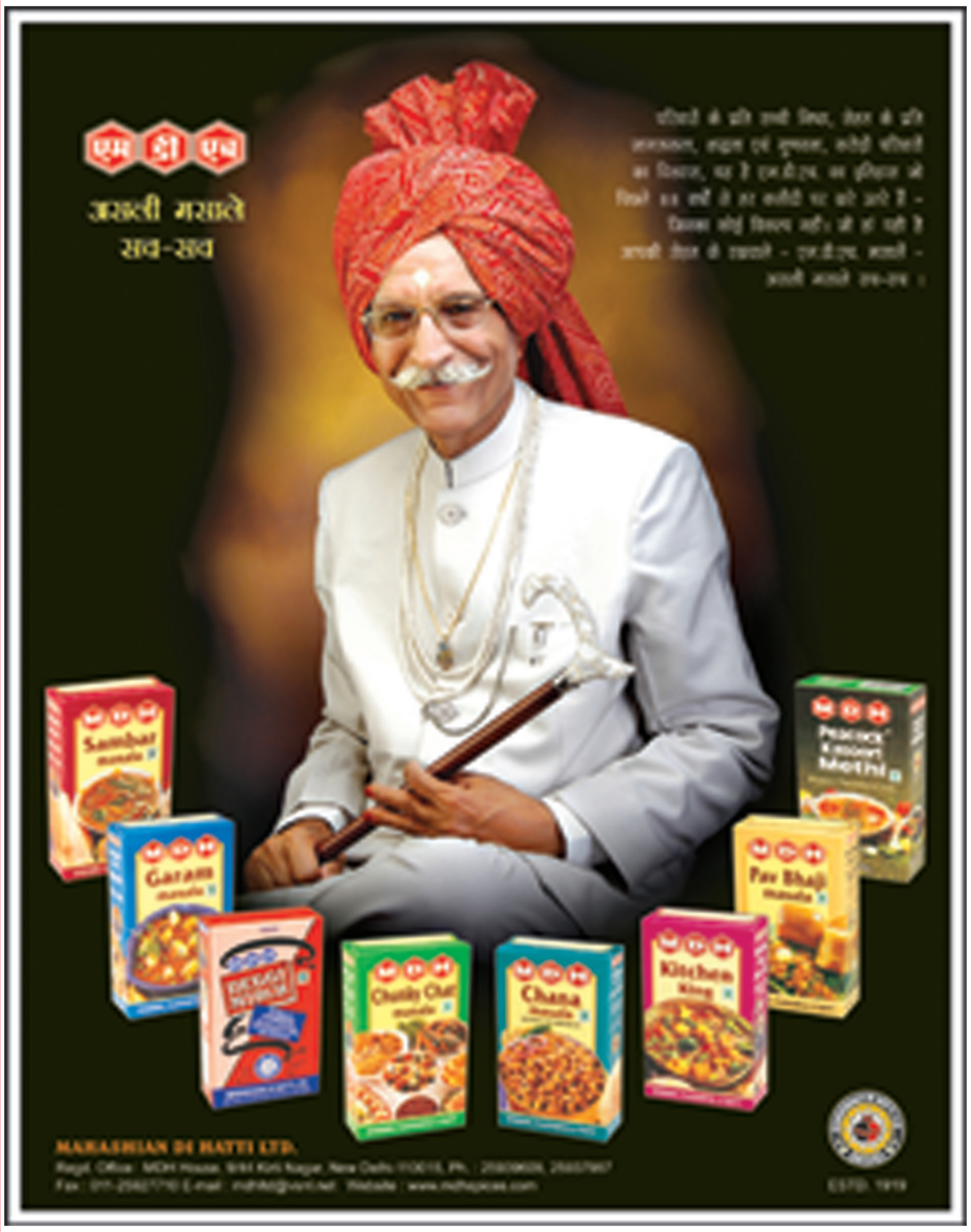

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ॰ ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह